Volume: 5 **Issue: 3** **Pages: 116-119**

International Journal of Advance Studies and Growth Evaluation

आधुनिक काल में शिवरीनारायण

[*1] डॉ. वर्षा सूर्यवंशी

[*1] अतिथि व्याख्याता, इतिहास विभाग, डॉ. खूबचन्द बघेल शासकीय महाविद्यालय, भिलाई, छत्तीसगढ़, भारत।

Article Info.
E-ISSN: 2583-6528
Impact Factor (QJIF): 8.4
Peer Reviewed Journal
Available online:
www.alladvancejournal.com

Received: 20/Feb/2026
Accepted: 22/March/2026

सारांश

शिवरीनारायण इन दिनों राष्ट्रीय जनजागृति का प्रमुख केन्द्र के रूप में उभरकर सामने आया। भारतेन्दु युग के सक्रिय साहित्यकार, समाजसेवी, मालगुजार और पश्चात शासकीय सेवा में तहसीलदार के पद पर रहे शिवरीनारायण भूमि के महान सपूत ठाकुर जगमोहन सिंह जी के साथ श्री मालिक राम द्विवेदी जी सरीखे प्रेरणास्पद रचनाकारों द्वारा अपनी रचनाओं को सेतु बनाकर राष्ट्रीय जनजागरण की ध्वनि को स्वर प्रदान किये गए। राष्ट्रीय साधना और आराधना ही शिवरीनारायण के निवासियों का सवर्वोच्च. लक्ष्य हो गया था। ठाकुर जगमोहन सिंह जी द्वारा समस्त साहित्यकारों को एक सूत्र में पिरो कर एक मंच इस उद्देश्य की पूर्ति के निहितार्थ प्रदान किया गया था। उन्होंने प्रलय, श्याम स्वप्न, सरोजनी, सम्पत्तिलता, प्रेम, मेघदूत, कुमार संभवम्, ज्ञानप्रदीप जैसे लोकमंगलकारी एवम् समाजोपयोगी रचनाओं का सृजन कर अपनी जन्मभूमि एवम् कर्मभूमि को गौरवान्वित किया।

***Corresponding Author**
डॉ. वर्षा सूर्यवंशी
अतिथि व्याख्याता, इतिहास विभाग, डॉ. खूबचन्द बघेल शासकीय महाविद्यालय, भिलाई, छत्तीसगढ़, भारत।

मुख्य शब्द: धार्मिक, शिवरीनारायण, आधुनिककाल ....इत्यादि।

प्रस्तावना:

शिवरीनारायण के इतिहास में 18वीं शताब्दी में बृहद् परिवर्तन हुआ जिसके तहत् अंचल में कलचुरी शासन की समाप्ति के साथ मराठा शासन के प्रभाव और विस्तार में वृद्धि होना शुरु हुई। रतनपुर शाखा के शासक रघुनाथ सिंह के शासन काल में मराठा सेनापति भास्कर पन्त के द्वारा छत्तीसगढ़ पर चढ़ाई कर रतनपुर राज्य को बगैर युद्ध अथवा विवाद के सन् 1741 में अपने अधिकार में ले ले लिया गया था। इस काल में रतनपुर शाखा के. शासक रघुनाथ सिंह ये जिन्हें पदच्युत कर उनके सम्बन्धी मोहन सिंह को रतनपुर का शासन सौंप दिया था। यह शासन सन 1758 तक कायम रहा था। अगला बड़ा परिवर्तन मोहन सिंह की मृत्यु तथा बिंबाजी के आगमन के साथ आया और यह नवीन शासन सन् 1854 तक कायम रहा था।

अप्रत्यक्ष अंग्रेजी शासन का काल सन् 1818 से 1830 तक रहा। प्रशासनिक व्यवस्था में, इस दौरान आए परिवर्तनों के फलस्वरूप, स्थापित की गई इकाई 'बरहो' का नाम तालुका कर दिया गया। और उसमें अनेक बरहों को एक कर दिया गया । तालुकों अधिकारी पटेल, कहलाया। ग्राम के अधिकारी गौटिया ठीक वैसे ही बने रहे और आगे वे मालगुजार कहलाए। शिवरीनारायण में ऐसे अनेक मालगुजार हुए जिनका नाम उनके सद्कार्यों एवम् उत्तम चरित्र के कारण छत्तीसगढ़ के अमर कीर्ति पुरुषों का इतिहास बन गया। इनमें सबसे प्रसिद्ध हुए स्वः माखन साव । इनके नाम पर शिवरीनारायण का प्राचीन और नामचीन माखन साब घाट स्थित है। माखन साव घाट में सती चैरा, हनुमान जी तथा बरम नाना (स्थानीय देवता) की मूर्तियों के अतिरिक्त अनेक शिव लिङ्ग भी स्थापित हैं। इस तट पर अपने परिवार की सुख-समृदि एवम वंश की वृद्धि के लिए माखन साव जी द्वारा लोकप्रिय महेश्वरनाथ का मन्दिर निर्मित करवाया था। इसका उल्लेख करते हुए पं. मालिकराम भोगहा जी स्वरचित ग्रंथ 'शिवरीनारायण माहात्म्य में कहते हैं कि, नदी खण्ड में स्थित महेश्वर महादेव मंदिर का निर्माण संवत 1890 में स्थित माखन साव ने के पिता श्री मयाराम साव ने कराया था।

वे पेशेवर कृषक होने के साथ-साथ सम्पन्न और समृद्ध व्यापारी भी थे जिनके उस समय के अनेक राजा-महाराजा, जमींदारों, मालगुजारों से आत्मीय और घनिष्ठ सम्बन्ध रहे थे। उनका स्वभाव मृदुल और मिलनसार था, साथ ही वे धार्मिक भी थे। उन्होंने आजीवन अपने क्षेत्र में समाजसेवी कार्यों को अंजाम दिया, जैसे अपने अधिकार क्षेत्र के अन्र्तगत आने वाले समस्त मालगुजारी ग्रामों में उन्होंने तालाब और कुएं खुदवाए जिससे सामान्यजन को अपने पास के स्थान पर ही साफ-स्वच्छ जल उपलब्ध एवम् सुलभ हो सके। इनमें से कई तालाब

और कुएँ आज भी मौजूद हैं और जल की आपूर्ति का साधन बने हुए हैं। कुछ तालाबों का विस्तार बट्टा होने के कारण इनसे सिंचाई की सुविधा भी मुहैया होती है। ऐसी मान्यता है कि शिवरीनारायण के अधिकांश कुओं को इनके परिवार के सदस्यों ने निर्मित करवाया था। इनके वंशजों के द्वारा भी इस परम्परा का पालन संर्वतोभावेन किया जाता रहा। इन्होंने तीर्थस्थलों जैसे, केदारनाथ, बद्रीनाथ, जगन्नाथपुरी, मथुरा, वृंदावन, बनारस, इलाहाबाद, कटनी, शिवरीनारायण, सारंगढ़, तालदेवरी, हसुआ और सोठी इत्यादि में धर्मशालाओं को बनवाया था। सोंठी में कुष्ठ आश्रम के लिए भूमि का दान किया था। इनके पौत्र मालगुजार स्व. श्री आत्माराम साव द्वारा शिवरीनारायण में स्कूल बनवाया गया था जो मिडिल स्कूल से आज हायर सेकण्डरी स्कूल बनकर आज भी संचालित है। ऐसे अनेक कार्य आज भी इनकी गुण गाथा के रूप में में शिवरीनारायणवासियों के लिए मिसाल हैं। हालांकि 1947 में स्वतंत्रता प्राप्ति के पश्चात् मालगुजारी प्रथा समाप्त कर दी गई थी।

बिषयवस्तु

आधुनिक कालीन शिवरीनारायण

शिवरीनारायण के आधुनिक काल का इतिहास इन मालगुजारों की कीर्ति कथाओं से पटा पड़ा है। आगे अंचल के प्रशासनिक व्यवस्था में घटित परिवर्तनों की श्रृंखला पर आगे बढ़ते हुए हम आगे अध्ययन करते है कि पूर्व में जमींदार नाम से प्रचलित मराठा अधिकार क्षेत्र में आने वाले तालुका 'खालसा' कहलाने लगे। जमींदारों के अधीन परगनों के अधिकारी कमाविसदार कहलाए। यह सूबेदारों के जिम्मेदारी और प्रभाव क्षेत्र में आते थे।

शिवरीनारावण का उथल-पुथल भरा काल सन् 1834 में महानदी में बाढ़ के रूप में आए प्रलय से शुरु हुआ था। यहाँ मानो सर्वस्व नष्ट हो गया था, सम्पूर्ण अस्तित्व क्षतिग्रस्त हो गया था, अपार जन-धन की हानि हुई थी। शिवरीनारायण अंचल की आर्थिक स्थिति पूरी तरह ध्वस्त हो चुकी थी। मराठा शासक, बिम्बाजी के मरणोपरांत व्यंकोजी की सुबेदारी की व्यवस्था के अन्तर्गत कई ग्राम वीरान हो गए थे। क्षेत्र में कानून और व्यवस्था का पतन हो रहा था। इस दौरान अराजकता की पराकाष्ठा के रूप में मराठा सिपाहियों द्वारा जगन्नाथपुरी जाने वाले यात्रियों के साथ की जाने वाली लूटपाट का उल्लेख भी मिलता है।

अंचल में 1787 से 1818 ईस्वी सन् तका 32 वर्षों तक मराठा सूबेदारों का शासन काल रहा। मराठा शासन के अंतर्गत सूबा प्रधान प्रशासनिक इकाई थी जो परगनों में विभाजित थी। परगनों की संख्या 27 के लगभग रही, हालांकि इस विषय पर मतभेद मिलता हैं। इसके पश्चात महत्वपूर्ण परिवर्तन किये गए, इनमें प्रमुख रहा राजधानी रतनपुर से रायपुर स्थानांतरित किया जाना। मराठा शासन में गठित परगनों का पुर्नगठन भी इन महत्त्वपूर्ण परिवर्तनों में से एक रहा। भोंसला प्रतिनिधि कृष्णाराव को पुनः 6 जून 1830 को छत्तीसगढ़ का शासन हस्तांतरित कर दिया गया। पूर्व में सूबेदार के पद पर रहे अधिकारी को जब जिलेदार की उपाधि दी गई, जिसका अर्थ है कि अब जिला के गठन की शुरुआत हो चुकी थी। अब छत्तीसगढ़ रघुजी तृतीय के संरक्षण में आ चुका था और निश्चित ही यह पूर्व के के मराठा शासन से कहीं बेहतर साबित हुआ था। रघुजी तृतीय के देहांत के साथ ही 13 मार्च 1854 को नागपुर राज्य के ब्रिटिश राज में विलय होने के साथ ही छत्तीसगढ़ में मराठा शासन का अंत हुआ, इसके साथ ही शिवरीनारायण अंचल स्वतः ब्रिटिश शासन के पूर्ण अधिकार में आ गया।

ब्रिटिश शासनकाल के परिप्रेक्ष्य में शिवरीनारायण

जैसा कि हमने देखा कि किस प्रकार क्रमवार प्रशासनिक परिवर्तनों ने आकार ग्रहण किया। सबों के स्थान पर तहसीलों और जिलों के गठन ने एक नवीनीकृत व्यवस्था का आगाज किया। इस अध्याय पर आगे बढ़ते हुए हम पाते प्राप्त है कि सन् 1854 से प्रारम्भ होकर 1947 में स्वतन्त्रता होने तक शिवरीनारायण अंचल में ब्रिटिश शासन काल रहा। इस काल में समस्त छत्तीसगढ़ को जिले का दर्जा मिला, साथ ही यहाँ तहसीलदारी व्यवस्था की शुरुआत हुई। इसके उपरांत मध्यप्रांत का गठन र नवम्बर 1962 में होने के साथ ही बिलासपुर जिला घोषित हुआ। यह वह स्वर्णिम काल था जब शिवरीनारायण को पहली बार तहसील का दर्जा और अधिकार मिले। इसके पहले खरौद और नवागढ़ में जो कार्य संचालित किये जाते थे अब शिवरीनारायण एवं नवनिर्मित तहसीलों से पूरे किए जाने लगे। इस दौर ने निश्चित ही शिवरीनारायण तहसील को अपनी स्वयं की एक सार्थक व सशक्त पहचान दी, किन्तु प्राकृतिक व्यवस्था ने पूरे परिदृश्य को बदल कर रख दिया। यह मानवीय विडम्बना है जिसके अनुसार सृष्टि द्वंदकारकों से ही सक्रिय है। विकास और विनाश, निर्माण और संहार भी इन्हीं में सम्मिलित हैं।

शिवरीनारायण अंचल का इतिहास महानदी की दिशा और गति के समानान्तर गतिमान होता है। देवीय विधान अथवा नियति का चक्र निष्पक्ष सत्ता है। जिसकी अनेदेखी नहीं की जा सकती हैं शिवरीनारायण के संदर्भ में भी ऐसा ही हुआ था, और यहाँ के नागरिकों ने भी उसे अपने आस्था के माध्यम से सहज बना दिया था। शिवरीनारायण के इतिहास में एक ऐसा अध्याय जुड़ा है जब महानदी के प्रलयंकारी बाढ़ का रूप धारण कर लिया था। 1995 में आई भीषण बाढ़ सारे परिदृश्य को बदल कर रख देती है। प्राकृतिक पर्यावरण के प्रति मानवीय अवमाना का ही यह परिणाम था। आपदा प्रबंधन की व्यवस्था एवं प्रबंधन के अभाव में शिवरीनारायण तहसील के अत्यंत आवश्यक एवं अनिवार्य कागजात बाढ़ में बह गए। आनन-फानन में अंग्रेज अधिकारियों द्वारा शिवरीनारायण को एक बाढ़ग्रस्त क्षेत्र घोषित करते हुए उसे खाली किये जाने का आदेश निकाला गया। शिवरीनारायण के लोगों के हृदय की आस्था बाढ़ के आगे घुटने टेकने के स्थान पर अपने ईश्वर के प्रति विश्वास के समक्ष नतमस्तक रही। अंग्रेजी प्रशासनिक व्यवस्था के आगे आत्मसमर्पण करने के स्थान पर शिवरीनारायणवासी ईश्वरीय व्यवस्था के प्रति आत्मार्पित रहे। उन्होंने सिद्ध किया कि हमारे यहाँ की धार्मिक व्यवस्था आज भी धार्मिक संविधान को हृदयंगम करती है।

आस्था की यह जीत एक ऐतिहासिक मिसाल बन गई।। द्वंद्ध यहां उत्पन्न हुआ कि वे स्वयं तो अपने निर्णय पर तटस्थ रहे हालांकि शिवरीनारायण से तहसील मुख्यालय का अधिकार एवम् आधिपत्य जाने से नहीं रोक सके थे। चाम्पा के जमींदार की सहमति स्वरूप यहाँ की तहसीली जांजगीर क्षेत्र में स्थानांतरित कर दी गई। तहसील जांजगीर को स्थानांतरित किये जाने से पूर्व के इतिहास में आता है कि पूर्व में शिवरीनारायण का तहसील कार्यालय यहां के प्रतिष्ठित भोगहा वंश के पण्डित यदुनाथ भोगहा जी के आवासीय भवन में आयोजित किया जाता था। अपने अध्ययन में मालगुजार माखन वंश के विषय में जाना, में पण्डित यदुनाथ भोगहा भी आते हैं। ये शिवरीनारायण के हमने इस कड़ी पुजारी, माफीदार और मालगुजार रहे। मराठी सनद से गोगहा वंश के विषय में जानकारी मिलती है। इसमें वर्णित है कि शिवरीनारायण स्थित वैष्ठाव मठ के अधिकार में आने वाले ग्रामों पर पूर्व के इतिहास में भोगहा वंश के अधिकार का पता चलता है। इसके साथ ही यह भी ज्ञात होता है कि शिवरीनारायण के बाजार की चुंगी वसूल करने का अधिकार भी भोगहा वंश के जिम्मे था। भोगहा वंश के पं. रामचंद्र भोगहा जी का नाम, संवत् 1974 और 54 वीं पीढ़ी अंकित है, जिससे इनके लम्बे सेवाकाल का पता चलता है। इसके वंशज आज भी मंदिर के भोगराग की व्यवस्था संभालते हैं। भोतग्रहा परिवार शिवरीनारायण की वंशावली का इतिहास उनकी 46 वीं पीढ़ी से मिलना शुरू होता है, इसके अंतर्गत पडित युद्धनाथ भोगहा जी 52 वीं पीढ़ी के चरण में जाते हैं।

ठाकुर जगमोहन सिंह जी के अनुसार भोगहा जी आप वहीं के प्रधान पुरुष हो। आपकी सहायता और प्रजा पर स्नेह, जिसके वश आपने टिकरीपारा की प्रजा का प्राणोद्धार ऐसे समय में जब चारों और त्राहि-त्राहि मची थी, किया था- इसमें सविस्तार वर्णित है। यह कह केवल कविता ही नहीं वरन् सब ठीक ठाक लिखा है।" इस वर्णन में आया है कि-

पुरवासी व्याकुल भए तजी प्राण की आस
त्राहि त्राहि चहुँ मचि रह्यो छिन छिन जल की त्रास
छिन छिन जल की त्रास आस नहिं प्रानन केरी
काल कवल जल हाल देखि बिसरी सुधि हेरी
तजि तजि निज निज गेह देहलै मठहिं निरासी
धाए भोगहा और कोऊ आरत पुरवासी ।। 52 ।।
कोऊ मंदिर तकि रहे कोऊ मेरे गेह
कोऊ भोगा यदुनाथ के शरन गए लै देह
शरण गये लै देह देह मरन तिन छिन में टारयौ
भंडारी सो खोलि अन्न दैदिन उबारयौ,
रोवत कोऊ चिल्लात आउ हनि छाती सोऊ
कोड निज धन घर बार नास लखि बिलपति कोऊ ।। 53 ।।

ठाकुर जगमोहन सिंह जी लिखते हैं कि "ऐसे जल प्रलय समय में जब पृथ्वी एकार्णव हो रही थी सिवाय वृक्षों की फुनगियों के और कुछ दिखाई नहीं देता और जिस समय सब मल्लाहों का टिकरीपारा तक नौका ले जाने में साहस टूट गया था, आपका वहां स्वयं इन लोगों को उत्साह देकर लिवा जाना कुछ सहज काम नहीं था। यों तो जो चाहे तर्क वितर्क करें पर जिसने उस काल के हाल को देखा था वही जान सकता है।"

उस काल में विजयराघवगढ़ के राजकुमार ठाकुर जगमोहन सिंह यहां के तहसीलदार हुए थे। थे साहित्यिक प्रतिभा के धनी थे। इनके सज्जनाष्टक नामक रचना से हमें शिवरीनारायण के ऐतिहासिक पुरुषों के कृतत्वों का ज्ञान होता है। इन्होंने साहित्यकारों को मंच प्रदान करने के लिए 'जगमोहन मण्डल' नामक मंच दिया। शिवरीनारायण अंचल को साहित्यिक तीर्थ के रूप में स्थापित करने में इनका अनन्यतम योगदान था।

शिवरीनारायण में बाढ़ की वजह से तहसीली का अधिकार जांजगीर क्षेत्र को स्थानांतरित होने से पूर्व भोगहा जी, महन्त अर्जुनदास जी और माखन साव जी को शिवरीनारायण अंचल ऑनरेरी मजिस्ट्रेट नियुक्त किया गया था। 27 मई सन् 1854 में श्री खेदूराम साव जी को ऑनरेरी बेंच का मजिस्ट्रेट और दरबारी घोषित किया गया था, साथ ही उन्हें आत्मरक्षण हेतु शस्त्र रखने की अनुमति भी प्रदान की गई थी। इस क्रम में जांजगीर तहसील घोषित किये जाने के बाद 31 मई 1920 में श्री खेदूराम साव जी के पुत्र श्री आत्माराम साव जी को जांजगीर तहसील के शिवरीनारायण बैच का मजिस्ट्रेट घोषित किया गया था। 29 अक्टूबर, 1920 को उन को बिलासपुर जिले का दरबारी नियुक्त किया गया था।

राष्ट्रीय आंदोलन और शिवरीनारायण

राष्ट्रीय आन्दोलन में सक्रियता और, जनभागीदारी के क्षेत्र में भी शिवरीनारायण को इतिहास स्वर्णिम अक्षरों में दर्ज है। शिवरीनारायणवासियों ने राष्ट्रीय आंदोलन से जुड़ी सभी गतिविधियों में सहयोग देते हुए उन में बढ़-चढ़ कर हिस्सा लिया। यहाँ असहयोग आन्दोलन के राष्ट्रव्यापी अभियान के प्रचलन के समय में विदेशी वस्तुओं का बहिष्कार किया गया और इस काल में मैं यहां राष्ट्रीय विद्यालय की स्थापना भी की गई थी। रोलेट एक्ट के विरोध में यहां हड़ताल की गई थी। शिवरीनारायण के जनवर्ग, विशेषकर नवयुवाओं का सन् 1942 में भारत छोड़ो आंदोलन में सहयोग तादात्म्य पूर्ण था। शिवरीनारायण के स्वतन्त्रता संग्राम सेनानी डॉ. कपिलनाथ शर्मा जी के द्वारा इन घटनाओं का वर्णन इस प्रकार किया गया है कि, 15 अगस्त 1942 आया, ग्रामीण साथियों के साथ मैने स्वतन्त्रता आन्दोलन हेतु एक जुलूस का आयोजन किया। इस आन्दोलन का नेतृत्व में कर रहा था। पुलिस ने मुझे बन्दी बनाकर तुरन्त रवाना किया। इस घटना से गाँवों में शेष का वातावरण बन गया। आन्दोलन ने उग्र रूप धारण कर कर लिया। रास्ते में मुझे पुलिस अफसरों ने कई प्रकार के लालच एवं प्रलोभन का शिकार बनाना चाहा, किन्तु उनको निराश होना पड़ा। 15 अगस्त की शाम को बिलासपुर जेल पहुंचा।"

इस प्रकार शिवरीनारायण में भी यह ऐसा काल था जब जनता मान्य के मध्य राष्ट्रीय चिन्तन एवं राष्ट्रीय क्रांति के कार्यों में साझेदारी की लहर व्याप्त थी। पण्डित कपिलनाथ शर्मा तथा झाडू राम यादव और पण्डित लाल जी जैसे राष्ट्रभक्तों द्वारा शिवरीनारायण में भारत छोड़ो आंदोलन की अलख जगाते हुए आन्दोलन का नेतृत्व किया गया था। शिवरीनारायण इन दिनों राष्ट्रीय जनजागृति का प्रमुख केन्द्र के रूप में उभरकर सामने आया। भारतेन्दु युग के सक्रिय साहित्यकार, समाजसेवी, मालगुजार और पश्चात शासकीय सेवा में तहसीलदार के पद पर रहे शिवरीनारायण भूमि के महान सपूत ठाकुर जगमोहन सिंह जी के साथ श्री मालिक राम द्विवेदी जी सरीखे प्रेरणास्पद रचनाकारों द्वारा अपनी रचनाओं को सेतु बनाकर राष्ट्रीय जनजागरण की ध्वनि को स्वर प्रदान किये गए। राष्ट्रीय साधना और आराधना ही शिवरीनारायण के निवासियों का सवर्वोच्च. लक्ष्य हो गया था। ठाकुर जगमोहन सिंह जी द्वारा समस्त साहित्यकारों को एक सूत्र में पिरो कर एक मंच इस उद्देश्य की पूर्ति के निहितार्थ प्रदान किया गया था। उन्होंने प्रलय, श्याम स्वप्न, सरोजनी, सम्पत्तिलता, प्रेम, मेघदूत, कुमार संभवम्, ज्ञानप्रदीप जैसे लोकमंगलकारी एवम् समाजोपयोगी रचनाओं का सृजन कर अपनी जन्मभूमि एवम् कर्मभूमि को गौरवान्वित किया। प्रलय नामक रचना में इनके द्वारा शिवरीनारायण की प्रलयंकारी बाढ़ का यथार्थ परिदृश्य सामने रखा गया जिसमें, साथ ही इस दौरान जिन सुहृदय समाज सेवियों ने प्राणपण से इस दौरान राहत कार्यो में स्वयं को तन-मन-धन से न्यौछावर किया उनके समर्पण को सम्मान प्रदान किया गया है।

निष्कर्ष:

शिवरीनारायण के इन ऐतिहासिक उतार-चढ़ावा की फेहरिस्त में फिर वह अध्याय जुड़ता है जब तमाम संघर्षो और परिश्रम के फलस्वरूप 15 अगस्त सन् 1947 के दिन भारत को राजनैतिक स्वतंत्रता मिली। इस राष्ट्रीय विजय के पुनीत अवसर पर शिवरीनारायण में भी हर्षोल्लास का वातावरण चारों ओर व्याप्त था। इस स्वर्णिम वेला में शिवरीनारायण के प्राचीन ऐतिहासिक मन्दिर में राष्ट्रीय ध्वज फहराया गया। इस उपलक्ष्य में समस्त प्रशासनिक भवनों एवम् महत्वपूर्ण इमारतों की सुंदर, भव्य सज्जा की गई नगर और ध्वजारोहण कर वंदे मातरम् गीत का गान किया गया। इस समय, प्रशासनिक बदहाली का मंजूर प्रस्तुत करने के साथ-साथ शिवरीनारायणवासियों आस्था की प्रकार विजेता बनकर उभरती है, इस किस प्रकार मानवीय संवेदना की विजय को एक कुशल चित्रकार की तरह उन्होंने अपन लेखनी के माध्यम से उकेरा है।

सन्दर्भ सूची:

1. शुक्ल, हीरालाल, छत्तीसगढ़ का जनजातीय इतिहास (2003), मध्यप्रदेश हिन्दीं ग्रन्थ अकादमी, भोपाल
2. सिंहदेव, जे.पी, ऑरोजिन ऑफ जगन्नाथ डेएटी, ज्ञान पब्लिशिंग हाउस, न्यूदिल्ली, दिल्ली,1991, आईएसबीएन-10-812120352,
3. वाजपेयी के.डी., प्राचीन और मध्यकालीन भारत का भौगोलिक विश्वकोश वैदिक, पौराणिक, तांत्रिक, जैन, बौद्ध साहित्य और ऐतिहासिक अभिलेखों पर आधारित, खण्ड-1, 1967, इंडिक अकादमी

4. रत्नदेव द्वितीय का कलचुरी संवत् 878 का पंडित रामचंद्र भोगहा, शिवरीनारायण से प्राप्त ताम्रपत्र लोचनप्रसाद पाण्डेय, ३. हि.क्रा. भाग 4, पृष्ठ 31-34, मिराशीका.इ.इ. भाग 4, खंड 2, पृष्ठ 419-422, हीरालाल सूची क्रमांक 212
5. जाजल्लदेव द्वितीय का चेदि संवत् 919 का चंद्रचूड़ महादेवशिवरीनारायण का शिलालेख - क. आ.स. दू.र. भाग 17, चित्र 20, भंडारकर - प्ररि आ.स.वे.इ. 1903-04, पृष्ठ 52-53, मिराशी-क.इ.इ.भाग 4, खंड 2- पृष्ठ 519-527, हीरालाल सूची क्रमांक 2031
6. मिराशी, वा.वि. कलचुरि नरेश और उनका काल‘
7. झा, लक्ष्मीधर, दक्षिण कौसल के अभिलेखों का सांस्कृतिक अनुशीलन (प्रारम्भ से बारहवीं शताब्दी तक)- शोध प्रबन्ध (1985), रविशंकर विश्वविद्यालय, रायपुर
8. गुप्त, मदनलाल, छत्तीसगढ़ दिग्दर्शन (भाग एवं 11), श्री प्रकाशन, दुर्ग, सन् 1996
9. भोगहा, पंडित मालिकराम, श्री शिवरीनारायण माहालय‘, संवत् 1965 (अप्रकाशित ग्रंथ)
10. शुक्ला, शांता, छत्तीसगढ़ का सामाजिक-आर्थिक इतिहास (1988), नेशनल पब्लिशिंग हाउस, आईएसबीएनः 812140104 नई दिल्ली
11. सिंह, ठाकुर जगमोहन, प्रलय (सन् 1889), भारत जीवन प्रेस, बनारस
12. ठाकुर जगमोहन सिंह जी विरचित ‘प्रलय‘ नामक पुस्तक के ‘‘समर्पण‘‘ शीर्षक के अंतर्गत भोगहा यदुनाथ जी के चरित्र का दृष्टांत विध्वंसक जल-प्रलय (बाढ़) की हृदयविदारक घटना के वर्णन के साथ प्रस्तुत किया गया है,